ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 12 | AUGUST - 2018

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

संजीव के उपन्यासों में शोषण की यथार्थता

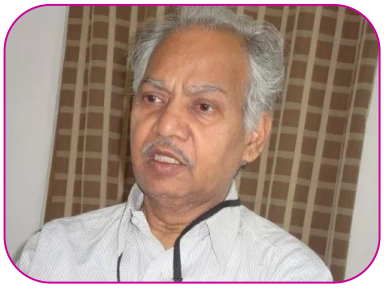

प्रा.प्रशांत नारायण ढेपे

हिंदी विभाग प्रमुख , ल.सी.हलबे महाविद्यालय, दोडामार्ग , ता - दोडामार्ग, जिला - सिंधुदुर्ग.

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य सागर में जीन चमकते हुए मानिक मोतियों का नाम सामने आता है उनमेसे एक साहित्यकार संजीव रहे है । इनका जन्म उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर जिले के अंतर्गत बांगर कला गाँव में ६ जुलाई १९४७ को हुआ । जन्म से ही उन्हें अभाओ जीना पड़ा, मात्र वे पढाई – लिखाई में अधिक तेज थे । उनके पिता का नाम रामशरण प्रसाद एव माता का नाम जयराजी देवी था । वे अपने माता पिता की सबसे छोटी संतान थे ।

संजीव ने अपने कथा साहित्य के माध्यम शोषित समाज की यथार्थता साकार की है । उनके कहानीयो में एव उपन्यासों में उन्होंने मजदुर, किसान, कलाकार, के साथ ही जाति वाद से शोषित समाज का चित्रण किया है । समाज के हर स्तर एव क्षेत्र में होने वाले स्त्री-पुरुष के शोषण अवस्था की यथार्थता उन्होंने समाज के उस स्तर और क्षेत्र में स्वंय जाकर महेसुस की है । वे कभी घर की चार दिवारी के भीतर कल्पना के धरातल पे सहित्य नहीं रचते तो समाज के शोषक वर्ग को भाँप कर वे शोषित वर्ग को जन-जन के सम्मुख अपने साहित्य के माध्यम से लाते है । संजीव स्वंय शोषित समाज के प्रति आस्था रखते है और शोषण की यह प्रवृत्तियां नष्ट होने की कमना करते है । संजीव के कई उपन्यास है उनमेसे कुछ उपन्यासों में स्थित शोषण की स्थितियों को हम संक्षिप्त रूप से जान सकते है ।

१) किसनगढ़ के अहेरी :

संजीव के किसन गढ के अहेरी इस उपन्यास में सामंत व्यवस्था का परिचय मिलता है । सामंत वर्ग यह अपने वर्चस्व के तले अनेक प्रकार के शोषण कर लेते है । इसमे नारी शोषण की प्रवृत्ति मुख्य रूप से दिखायी देती है । विधवा भांजी राधा का यौन शोषण स्वंय ब्रह्मचारी करलेता है, इसके बावजूद भी वह राधा को

दरोगा के हवाले सौंप देता है ओर दरोगा भी उसका यौन शोषण करता है। इस उपन्यास में राधा की तरह ही और भी पात्र उजागर होते है। जिसमे चाँदनी,रतिया,सोना यह दिखाई देती है।

किसन गढ़ में केवल सामंतो का राज है यहाँ तो आम जनता साधारण रूप से भी जी नहीं पाती है। यहाँ जो पूंजीवादी सत्ता है। वह माजुरो का आर्थिक,मानसिक और यौन शोषण करते दिखाई देती है। किसान गढ़ के इन अहेरी के सामने आने से हर कोई डरता है। ऐसी अवस्था में जय नामक युवक गाँव वालो को समझा बुझाकर ऐसी शोषण परम्परा का विरोध करने के लिए सभीको एक होने के लिए कहता है। गाँव का अधिपति रुपाई सिहं है जिसके सामने सभी सरकारी अफसर दुम हिलाते रहते है और यहीं से शोषण की जड़े गाँव में निम्न वर्गियो को जकड लेती है जिससे शोषित छुट ही नहीं पता। जय की हत्या जोतिषी बाबा और सनातनी करते है कर देते है इतनाही नहीं तो उसकी आँखों के सामने उसकी पत्नी चाँदनी के साथ बलात्कार भी कर देते है। जय की मृत्यु के बाद शोषित वर्ग इकट्टा होकर चांदनी को सहारा देता है और जय के शेष कार्य को अंजाम देता है। इस तरह से किशन गढ़ के अहेरी इस उपन्यास में लेखक संजीव जी ने शोषण की प्रवृत्तियों को पाठकों के सम्मुख रखा है।

२. सर्कस उपन्यास :

सर्कस उपन्यास में बहार से चका-चौंध दिखने वाली इस दुनिया का असली और अंतर्गत स्वरुप उजागर होता है जो कि बहोत ही बुरा है। सर्कस में कलाकारों की मज़बूरी अपने चरम उत्कर्ष तक पहोंचती है। इसमे मानसिक शोषण, उपेक्षा,मोहभंग, व्यथा और समस्या की नीव पर कलाकार खड़ा दिखाई देता है। एक झरना नामक यवती के बचपन से उसके विवाह के उपरांत तक की अनेक समस्याए सामने आती है। मूर्तिकार विकास से विवाह के उपरांत झरना और उसके पति के सबंध टूट जाते है। झरना की सारी समस्याए और शोषित जीवन सर्कस के माध्यम से बतलाया गया है।

भारतीय सर्कस को १९८४ में सौ पूर्ण होने के कारण रचनाकार संजीव सर्कस एस उपन्यास की रचना करते है। सर्कस चलने के के लिए उसके मालिक को अनेक समस्याओ का सामना करना पड़ता है लोगो को आकर्षित करने के लिए मालिक नये – नये कलाकार आमंत्रित करता है। इसमे पुराने कलाकारों के जीवन यापन की समस्या अवतरित होती है,जो की सिर्फ सर्कस पर अपने जीवन खर्च चलते है। लोगो को आकर्षित करने के लिए कलाकारो से बहोत ही मुश्किल कार्य करवालिया जाता है, जिसमे उनकी जान को भी खतरा हो सकता है। यहाँ कलाकारोके जान की कदर नहीं तो बस अपने मुनाफे और मनोरंजन की कदर दुनियावालो में दिखाई देती है। यहाँ सर्कस का कलाकार किसी पालतू जानवर की तरह होता हुआ दिखाई देता है,जो मजबूरन अपने मालिक के इशारे पर रोटी के लिये नाचता दिखाई देता है। उसकी कीमत केवल उसमे कला का हुनर होने तक ही होती है और जब उसका शरीर साथ न दे तब उसे काम से निकला जाता है ऐसे हालत में जीवन यापन की कोई भी सुविधा इन कलाकारों के पास नहीं होती जैसे की चंद्रा यह पात्र इस उपन्यास में दिखाई देता है।

३) सावधान ! निचे आग है :

यह उपन्यास डायरी शैली में लिखा गया है जिसमे दो खंड मिलते है एक 'सतह से निचे' और दूसरा 'सतह के ऊपर है' एन दोनों खंडो में भी अनेक उपशीर्षको के माध्यम से कथा स्पष्टीकरण दिया गया है । उपन्यास में झारखंड प्रांत के अंतर्गत आने वाले धनबाद नामक जिले के चंदनपुर गाव की चासनाला खदान की दुर्घटना का विवरण मिलता है । खदान की दुर्घटना सरकार के लिए कोई महत्व नहीं रखती है, वह केवल दुःख जताकर चली जाती है । इस दुर्घटना का कसूरवार प्रबंधन है लेकिन वह रानीतिक ताकत से और सबूतों को नष्ट करते हुए बार-बार बच निकलता है । करीब एक हजार मजदूरो की जाने एस खदान की दुर्घटना में चली जाती है अपितु तिन सौ इक्यावन मजदुर मर गए है यह जाँच-पड़ताल फाइल में लिखा जाता है । उधमसिंह और कुछ मजदुर इक्कीस दिनों तक एयर पॉकेट के सहारे बचे रहते है लेकिन उन्हें भी बचाया नहीं जाता । इस उपन्यास में मजदूरो को किस तरह से उपेक्षित रखा जाता है इसकी यथार्थता मिलता है । उधमसिंह मरने के पहिले जो डायरी लिखता है वह भी खरीदकर जलाई जाती है । मगर ऐसा लिखा जाता है की स्वय उधमसिंह ने यह डायरिया कुछ पैसो के लालच में बेच दी है । मजदुर शोषण की प्रासंगिकता आज भी ठेकेदार, जमींदार और कारखानों में दिखाई देती है । इस दुर्घटना की जाँच केवल एक औपचारिकता बन जाती है ।

मजदूरो को न्याय दिलाने के लिए और ऐसी घटनाये फिरसे न हो इसलिए कोई भी कार्यवाही नहीं की जाती । क्योंकि स्वार्थ के टीले पर जा बैठे नेतागण इन मजदूरो को न्याय नहीं दिलाना चाहते है । यह यथार्थता संजीव ने यहाँ दिखलाई है ।

४) धार :

धार यह संथाल आदिवासियों की परिस्थिति बतलाता है । झारखंड राज्य के संथाल आदिवासी एवं छोटा नागपुर, बांसगडा के आदिवासी यह शोषण का शिकार प्राय: बनते दिखायी देते है । मैना नामक पात्र यह इस शोषण प्रथा के खिलाफ खुलकर विरोध करती है । इस लड़ाई में मैना को बहोत संघर्ष करना पड़ता है । पूंजीवादीयो के वर्चस्व के तले आदिवासी वर्ग को केवल असम्मान और अपमान मिलता है । मैना यह स्वयं आदिवासी होने के कारन अपने समाज को सम्मान दिलाने के लिए लडती है । मैना को उसके इस कार्य में अविनाश शर्मा मदद करते है । उपन्यास में जनखदान की पूंजीवादी व्यवस्था, भ्रष्ट राजनीति एव माफिया राज का परिचय मिलता है ।

५) सूत्रधार :

सूत्रधार उपन्यास में भिखारी ठाकुर के जीवन संघर्ष को बतलाया गया है । नाई जाति में जन्मे भिखारी ठाकुर की जाति –पति इस अनिष्ट परंपरा की समस्या को झेलना पड़ता है । वे भोजपुरी परिवेश के एक नाटक कलाकार है । अपने नाटको के माध्यम से वे जातिय वाद तथा ऊँच – निच की अनिष्टता के खिलाफ जनजागृति करते है । उनकी लोककला से समाज परिवर्तन हो सकता है इस पर उन्हें काफी विश्वास है । समाज में बटी बेचने की जो अनिष्टता है वह उन्हें ठीक नहीं लगती इसलिए वे 'बेटी वियोग' नामक नाटक रचकर उसे

गाँव-गाँव में पेश करते है। इससे लोगो के परिवर्तन आता है और वे बेटी न बेचने की कसम खाते है। भिखारी का संपूर्ण कार्य देखकर यह लगता है की वे एक समाज सुधारक है। भारत स्वतंत्रता काल में भिखारीदास अपने नाटको के जरिये अंग्रेजी नीतियों पर प्रहार की अपेक्षा समाज सुधर की और अधिक मुड़ते हुए दिखाइ देते है।

6) पाँव तले दूब :

यह उपन्यास झारखण्ड के मेझिया गॉव और बाघामुंडी की आदिवासी समाज के संघर्ष को बतलाता है। शोषक समाज की मनमानी के आगे आदिवाशी समाज घुटन भरी जिंदगी जीने लगता है । सरकर ओद्योगीकरण के नाम पर इनकी जमीने चीन लेता है। अंधविश्वास में जीने वाले यह लोग सत्य से दूर है। अपितु शोषक व्यवस्था के प्रति उनमे विद्रोह है इसलिए वे अपने ही समाज के तत्वों को बदल देना कहते है ।सुदीप नामक आदिवासी अपने समाजज को सुधारना चाहता है मात्र वह कामियाब नहीं होता। बढती शोषण की नीतियों के कारन वह आखिरकार जंगल में जाकर आत्महत्या कर देता है। अदिवासी समाज यह पढाई – लिखाई तयह शिक्षा से से अंजन है। सरकार द्वारा जमीने छिन ले जाने पर कुछ लोगो को थोडा बहोत मुआबजा मिलता है तो कुछ लोगो को नहीं मिलता। उपन्यास में सुदीप के साथ ही मनीष और हसंदा भी आदिवासियों के हक़ के लिए संघर्ष करते है।

७) जंगल जहाँ शुरू होता है :

बिहार के पशिमी चम्पारण के परिवेश में जो की मिनी चंबल नाम से प्रसिधद है वहाँ के थारू नामक आदिवासियों के शोषण स्थितियों का परिचय इस उपन्यास के माध्यम से मिलता है । थारू समाज पर नेतागण, पुलिस,डाकू,जमींदार,अपनी मनमनी चलते है। यह स्थान डाकुओं को अपना फिरौती का धंदा बहोत हबढ़ाने के लिए बहोत ही लाभदायक है क्योंकि यहाँ चारो और जंगल गर्द फैला हुआ है। कुमार नामक पुलिस अफसर डाकुओ को जड़ से ही खत्म करना छठा है। अपितु भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था के कारन वह अपने कार्य को अंजाम नहीं दे सकता। कथानक में पांडा और भाग को प्रतीकात्मक रूप से लिए गया है जो की शोषित और शोषक का प्रतिनिधित्व निभाते है।

८) रानी की सराय :

'रानी की सराय' यह संजीव का किशोर उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा डॉ वर्गों में विभाजित होती है। गॉव यह पिछडा,भुतेली है जो की 'रानी की सराय' में अवतरित हुआ है। गाँव में हिन्दू और मुस्लिम यह गाँव के गैर तत्वों का विरोध करते है। मास्टर हुसेनी आने के पूर्व और हुसेनी आने के उपरांत जो गाँव बताया गया है वह आधुनिक धरातल पर टिक जाता है । गाँव में पढ़े लिखे लोग आनेसे गाँव भुतहा से आधुनिक बन सकता है। यह बात गाँव के वर्चस्वदियो को खूब पता है अपितु अंधविश्वास और धार्मिक पाखंड की आड़ में गाँव कभी आधुनिक नहीं हो पाया। मधोबबा और सुलेमानी यह लोग ही गाँव को आधुनिक नहीं

बनाने देते। अपितु हुसेनी एस गाँव को धुनिक बना ही देता है ।गाँव की अन्धविश्वास की जड़ो को तोड़ देता है। जातीय अहंकार और सामंतीय परंपरा को हुसेनी ख़त्म कर देता है।

९) आकाश चंपा :

आकाश चंपा इस उपन्यास में मोतीलाल मिश्र का जीवन संघर्ष बतलाया गया है। हालाँकि 'आकाश चंपा' एक पेड़ का नाम है, जिसमे दो बार बसंत भर आती है। खास बात यह है कि एक बसंत में जीन डालियों पर कलियाँ नहीं आयी उस पर दुसरे बसंत में आ जाती है। आकाश चंपा की यही विशेषता मानव जीवन से जुडी है। क्योंकि मानव जो जी नहीं सकता उसी तरफ अधिक मुड जाता है और अपनी इच्छा के अनुरूप एक दुसरे विश्व में जीते हुए अपने कार्य को अंजाम देता है। मोतीलाल भी अपने निजी जीवन तथा खुशियों को त्यागकर लोक उद्धार के जीवन को अपनाते है, जिसमे उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ता है। मिश्र यह ब्राह्मण परिवार से है, जो की गरीबो के हक़ के लिए हमेशा सामने आते है। पाठशाला में नौकरी करते है करते हुए वे अपने लोक हितवादी कार्य को अंजाम देते है। अपने ही घर के सामने नीम के पेड़ पर लटकाकर फांसी दिए गए उन पांच देश भक्तो का इतिहास वे खोज लेते है। मोतीलाल के मन में देश स्वतंत्रता के उपरांत देश की भ्रष्ट अवस्था देखकर विद्रोह निर्माण होता है। वे देश भ्रष्ट करने वाली प्रवृत्तियों को तोड़ देना चाहते है। इसीलिए वे अनशन पद्धति को अपनाते है। मोतीलाल न्यायवादी और विचारो से आदर्शवादी रहे है अपितु समाज के ठेकेदार उनके आदर्शवाद का सम्मान नहीं रखते। इतना ही नहीं तो उनके ही बेटे और पत्नी से उन्हें समाज सुधर कार्य में असहयोग तथा असम्मान मिलता है। अन्य समाज सुधारको के प्रति उनमे प्रगाढ़ आस्था है।

वीरेन्द्र सिंह नामक कर्तव्य निष्ट नेता से मिलकर वे समाज सुधार का काम करते है अपितु समाज के सामंतवादी एव भ्रष्ट वर्चास्व के आगे उन्हें बहोत संघर्ष करना पड़ता है। वरिन्द्र सिहं को मर डाला जाता है और फिर मोतीलाल उनके हत्यारों को सजा दिलवाने के लिए अनशन का मार्ग अपनाते है। सामंतवादीयो से फिर मोतीलाल की भी हत्या की जाती है। उन्हें उसी नीम के पेड़ से लटकाकर फांसी दी जाती है जहाँ उन पाँचो देश भक्तो को फांसी दी गई थी। यहाँ मोतीलाल स्वंय वर्चस्ववादियों के शोषण का शिकार बन जाते है, क्योंकि वे उनसे हाथ मिलाने के बजाय उनकी शोषण प्रवृत्यों का विरोध करते है।

समारोप :

संजीव के लगभग सभी उपन्यासों में समाज में पनपने वाली शोषित प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है। क्योंकि संजीव उन निर्दोष शोषितों के प्रति प्रगढ़ सहानुभूति रखते है। शोषितों को खोजने के लिए वे स्वंय उस स्थान पर जाते है जहाँ शोषित वर्ग घुटन भरी जिंदगी जी रहा है। सदियों से वर्चस्व वादियों से समाज के मध्यम तथा निम्न वर्ग को उपेक्षित रखा गया है और यह परम्परा आज भी किसी न किसी रूप में दिखाई देती है। समाज के पूंजीपति एव सामंतवादी व्यवस्था के कारन आज भी जातीयवादी अनिष्टता, आर्थिक एव मानसिक शोषण की प्रवृत्तियां प्रासंगिक रही है। इन्ही प्रवृत्तियों को जानकर संजीव ने शोषितों की दुर्लभ परिस्थितियों को जन-जन के सम्मुख लाने का प्रयास किया है। क्योंकि वे एक सुन्दर समाज की कामना करते है। जिसमे समाज के सभी स्तर तथा वर्ग सुख से जीवन यापन कर सके। ऐसी सर्व सामान एव सम्मान

के दृष्टिकोण की समाज व्यवस्था लाने की मांग वे अपने कथा साहित्य के माध्यम से सभी के सामने रखते है । अंत: इनका कथा साहित्य शोषित प्रवृत्त्यों को उजागर करने में सफल होता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सुची :

अं क्र.	उपन्यास का नाम	रचनाकार	प्रकाशन
१	सर्कस	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन,जगतपुरी,नई दिल्ली, संस्करण १९८४
२.	रानी की सराय	संजीव	रेमाधव पब्लिकेशन्स,प्राईवेट लिमिटेड,गाजियाबाद उत्तरप्रदेश, संस्करण २००९
३.	सावधान ! निचे आग है	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन,अंसारी मार्ग, नई दिल्ली, संस्करण १९८६
४.	किसनगढ़ के अहेरी	संजीव	मीनाक्षी पुस्तक मंदिर,नविन शाहदरा,दिल्ली, संस्करण १९९१
५	धार	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन,अंसारी मार्ग, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण २०११
६.	जंगल जहाँ शुरू होता है	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन,अंसारी मार्ग, नई दिल्ली, संस्करण २०१०
७.	पाँव तले दूब	संजीव	प्रवीन प्रकाशन महरोली नई दिल्ली, संस्करण १९९०
८.	सूत्रधार	संजीव	राधाकृष्ण पेपरबैक्स प्रकाशन,ली.दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण २०१०
९.	आकाश चंपा	संजीव	रेमाधव पब्लिकेशन्स,प्राईवेट लिमिटेड,गाजियाबाद उत्तरप्रदेश, संस्करण २००८